

रामनरेश त्रिपाठी की सामाजिक प्रतिबद्धता

पुरन्दरदास

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ, बिहार

सारांश

साहित्य समाज-दर्शन और सामाजिक प्रेरणा का शास्त्र है। समसामयिक समाज-दृष्टि को परिभाषित और व्याख्यायित करने तथा पुरातन मूल्यों को प्रतिष्ठित करने में साहित्य की विशिष्ट भूमिका है। साहित्य मनुष्य के विवेक, बुद्धि, अस्तित्व और विकास का आधार है। किसी भी साहित्यिक रचना में सामाजिक विवेक का जागरण, सार्वजनिक एवं सार्वभौमिक हित-चिन्तन तथा अमानवीय शक्तियों से संघर्ष का उद्घाटन अपेक्षित होता है। कोई भी समाज जब किन्हीं खास कारणों से अपनी बद्धमूल धारणाओं में परिवर्तन करता है और किसी नयी वैचारिक चिन्तनधारा को ग्रहण करता है वह परिवर्तन उस समाज का नवजागरण कहा जाता है। कविवर रामनरेश त्रिपाठी का काव्य मानवतावाद की नवीन वैचारिकता, नवजागरण से संपृक्त है।

बीज शब्द

नैतिकता, आदर्श, जीवनमूल्य, मानवतावाद, लोककल्याण, सामाजिकता

हिन्दी नवजागरण काव्य राष्ट्रीयता, देश-प्रेम, समाज-सुधार, आदर्शवाद, जीवनमूल्य और नैतिकता के भावों से ओतप्रोत है। राष्ट्र की गंभीर व दयनीय स्थिति का चित्रण करने के साथ ही नवजागरणकालीन कवियों ने देशवासियों को आत्मबलिदान के लिए अभिप्रेरित करते हुए स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त किया। तत्पुगीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों ने रचनाकारों को जागरण-सन्देश के लिए प्रेरित किया। मैथिलीशरण गुप्त, गोपालशरण सिंह, गयाप्रसाद 'सनेही', लोचनप्रसाद पाण्डेय, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', नाथूराम शर्मा 'शंकर', राय देवीप्रसाद पूर्ण, रामचरित उपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी आदि रचनाकारों ने आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी से अभिप्रेरित होकर भारतीय नवजागरण को ही अपने कवि-कर्म का मूल लक्ष्य स्वीकार किया और हिन्दी काव्य-जगत् को अनेक रूपों में प्रभावित किया।

हिन्दी नवजागरण काव्य के प्रस्थान बिन्दु पण्डित रामनरेश त्रिपाठी ने जीवन की विविध अनुभूतियों को बड़े ही सरल, सहज व संवेदनशील रूप में अपने काव्य में प्रस्तुत किया है। उन्होंने समसामयिक जीवन में व्याप्त घोर सामाजिक-आर्थिक विषमताओं, असमानताओं और निरर्थकता को काव्य-संवेदना के स्तर पर अनुभूति के माध्यम से प्रकट किया है। त्रिपाठीजी ने काव्य में बिम्बों का सार्थक प्रयोग किया है। सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय अनुभूति को वे बिम्बों के माध्यम से कौशलपूर्वक प्रस्तुत करते हैं। आमजन की अनुभवगत जटिलता के विश्लेषण और बखान को वे अपने कवि-कर्म का प्रमुख प्रयोजन अंगीकार करते हैं।

रामनरेश त्रिपाठी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व साहित्य-सर्जना और सहज रचनाधर्मिता का प्रतिबिम्ब है। अपनी कृतियों में वे मनुष्य की दुनिया के माध्यम से प्रासंगिक और रचनात्मक रूप में उपस्थित होते हैं। उनकी रचनात्मक संवेदना में नवजागरण काव्य की मूल प्रवृत्तियाँ इतनी सहजता से समाहित हैं कि उन्हें नवजागरण काव्य का 'सहज नागरिक' कहा जा सकता है। खड़ी बोली की ओर उनका वास्तविक रुझान 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम एवं प्रभावस्वरूप हुआ। उनके चार काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए – 'मिलन' (1917), 'पथिक' (1920), 'मानसी' (1927) और 'स्वप्न' (1929)। 'मानसी' राष्ट्रभक्ति, प्रकृति-चित्रण और नीति-निरूपण से सम्बन्धित उनकी कविताओं का संकलन है जबकि 'मिलन', 'पथिक' तथा 'स्वप्न' उनके काल्पनिक कथाश्रित प्रेमाख्यानक खण्डकाव्य हैं जिनमें व्यक्तिगत सुख और स्वार्थ को त्यागकर राष्ट्र और लोक के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा दी गई है।

व्यक्तिगत जीवन की पद्धति जब समष्टि की संवेदना के साथ समाहित हो जाती है तब अनुभव की सामाजिक परम्परा जन्म लेने लगती है। व्यक्तिगत संवेदना का रूपान्तरण सामाजिक संवेदना के साथ एक ओर तो संघर्ष की प्रक्रिया से जूझता है और दूसरी ओर उसकी दृष्टि को भी विकसित करता है किन्तु यदि अनुभव की संवेदना आदर्श एवं नैतिक मूल्यों की पहचान न बन सके तो एक ओर जहाँ उसकी संवेदना जड़ होने की प्रक्रिया में आ जाती है वहीं दूसरी ओर व्यक्तिवादिता और आत्मनिसन की जड़ें इतनी गहरी हो जाती हैं कि सम्पूर्ण मानसिकता ही संज्ञाशून्य और विद्रूप होने लगती है।

मनरेश त्रिपाठी की रचनाओं में अवसरानुकूल प्रकृति के मनोहारी चित्रण मिलते हैं। त्रिपाठीजी ने हिन्दी, उर्दू, बांग्ला एवं संस्कृत की कविताओं का संकलन और सम्पादन 'कविता-कौमुदी' के आठ भागों में किया है। लोक-गीतों का संग्रह भी उन्होंने बड़े मनोयोग से किया है। घाघ-भङ्गुरी की लोक-प्रसिद्ध कहावतों पर उनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थ साहित्य-जगत् की अनमोल धरोहर है।

रामनरेश त्रिपाठी की कविता में नवजागरणकालीन काव्य की सम्पूर्ण विशेषताएँ एक साथ उपस्थित होती हैं। नवजागरणकाल में राष्ट्रीयता, समाज-सुधार, स्वातन्त्र्य-चेतना, मानवतावाद, सामाजिक समरसता एवं गाँधीवाद का बोलबाला था। त्रिपाठीजी ने अपनी रचनाओं में उक्त समस्त मूल्यों का पर्याप्त समावेश करते हुए युगबोध एवं सामयिकता का परिचय दिया है। त्रिपाठीजी की आकांक्षा है कि प्रत्येक मानव अपनी पूरी शक्ति से उठ खड़ा हो, उसे अपने अधिकारों और कर्तव्यों की पूरी समझ हो और वह अत्याचारों का पुरजोर विरोध कर सके। रूढ़ीवादी मान्यताओं को नष्ट करने को दृढ़ संकल्पित उनकी रचनाओं में सामाजिक व्यवस्था को संवारने के प्रति विशेष आग्रह दिखाई देता है।

राजनैतिक चेतना तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान के परिणामस्वरूप विकसित राष्ट्रीयता की भावना हिन्दी

नवजागरण काव्य का केन्द्रीय विषय रहा है। रामनरेश त्रिपाठी की कविता का प्रधान स्वर राष्ट्रीयता ही है। कविवर त्रिपाठी अपनी रचनाओं में देशभक्ति का प्रणयन करते हैं। वे क्रान्ति और आत्मोत्सर्ग का सन्देश देते हैं एवं परतन्त्रता के बन्धन तोड़ डालने हेतु प्रेरित करते हैं –

सच्चा प्रेम वही है जिसकी, तृप्ति आत्म-बल पर हो निर्भर

/

*त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर ॥
देश-प्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है, अमल असीम त्याग से
विलसित।*

आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित

//

रामनरेश त्रिपाठी जिस सामाजिक परम्परा के रचनाकार हैं, उसका आधार सांस्कृतिक और राजनैतिक मूल्य हैं। ये मूल्य भारतीय नवजागरण से उत्पन्न हुए हैं। हिन्दी नवजागरण काव्य को सुधारवादी काव्य भी कहा जाता है। रामनरेश त्रिपाठी सामाजिक समस्याओं तथा धार्मिक जड़ताओं को अपनी कविता का विषय बनाते हैं। जिस समय और समाज ने उनकी रचनात्मक दृष्टि का निर्माण किया है और उसे सामाजिक प्रतिबद्धता से जोड़ा है, वह समय और समाज भारत में सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलन की चरम अवस्था है। रामनरेश त्रिपाठी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक सुधारों को राजनैतिक चेतना से जोड़कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक सामाजिक आन्दोलन का सूत्रपात करते हैं। उनकी कविताओं में समसामयिक समस्याओं के प्रति गहन चिन्ता भाव दिखाई देता है –

तुम मनुष्य हो, अमित बुद्धि-बल-विलसित जन्म तुम्हारा।

क्या उद्देश्य रहित है जग में, तुमने कभी विचारा ?

बुरा न मानो, एक बार सोचो तुम अपने मन में।

क्या कर्तव्य समाप्त कर लिए, तुमने निज जीवन में ॥

रामनरेश त्रिपाठी काव्य में आदर्श एवं नैतिकता के प्रबल पक्षधर हैं। आदर्शवाद एवं नैतिकता का समर्थन करते हुए वे अपने रचनात्मक तेवर के साथ उपस्थित होते हैं। अभिव्यक्ति के केन्द्रीयकरण पर बल देकर वे उसे असीम शक्तिशाली बना देते हैं। उनकी कविताएँ उच्च मानवीय आदर्शों और सामाजिक चेतना के यथार्थबोध का लक्ष्य लेकर चलती हैं। उनका रचनात्मक दृष्टिकोण निरन्तर प्रवाहमान है। उनकी कविताओं का केन्द्र-बिन्दु मानव-हित है। अपने सारे अनुभव अपनी पूरी गहनता और संवेदना के साथ दूसरों तक पहुँच जाँ, यही उनके कवि-कर्म का परम लक्ष्य है –

पुण्य चरित सज्जन से विषयी कल्मष-मध्य-निवासी

न्यायी से वंचक, दाता से कृपण विशेष विलासी।

जहाँ श्रमी से क्रयी-विक्रयी, वेश्या सुखी सती से

निर्जन वन है परम सुखद उस न्याय-रहित जगती से ॥

व्यक्तिगत जीवन की पद्धति जब समष्टि की संवेदना के साथ हो जाती है तब अनुभव की सामाजिक परम्परा जन्म लेने लगती है। व्यक्तिगत संवेदना का रूपान्तरण सामाजिक

संवेदना के साथ एक ओर तो संघर्ष की प्रक्रिया से जूझता है और दूसरी ओर उसकी दृष्टि को भी विकसित करता है किन्तु यदि अनुभव की संवेदना आदर्श एवं नैतिक मूल्यों की पहचान न बन सके तो एक ओर जहाँ उसकी संवेदना जड़ होने की प्रक्रिया में आ जाती है वहीं दूसरी ओर व्यक्तिवादिता और आत्मनिर्वासन की जड़ें इतनी गहरी हो जाती हैं कि सम्पूर्ण मानसिकता ही संज्ञाशून्य और विद्रूप होने लगती है। व्यक्तित्व के विकास की पहली दशा आदर्शवादी एवं नैतिक होने की प्रक्रिया है जबकि दूसरी दशा लगातार जड़ होते भावबोध की एकालाप स्थिति। कवि रामनरेश त्रिपाठी की कविताएँ अपनी यात्रा पहली दशा से आरम्भ करके उसे क्रमशः पूर्ण करती हैं। उनके द्वारा विरचित 'मानसी', 'मिलन', 'पथिक' आदि रचनाएँ आदर्शवादी हैं। त्रिपाठीजी की संवेदनशीलता व चिन्तन की गहराई उनकी निम्नलिखित पंक्तियों से अनुभव की जा सकती है -

कभी उदर ने भूखे जन को, प्रस्तुत भोजन पानी।
देकर मुदित भूख के सुख की क्या महिमा है जानी ?
मार्ग पतित असहाय किसी मानव का भार उठा के।
पीठ पवित्र हुई क्या

सुख से उसे सदन पहुँचा के ?
रामनरेश त्रिपाठी प्रेम के आदर्श स्वरूप को अभिव्यक्त करते हैं। उनकी दृष्टि में प्रेम जीवन की अद्भुत शक्ति है तथा उसके बिना जीवन अर्थहीन है। त्रिपाठीजी के काव्य में प्रेम के निहितार्थ शब्दों एवं संवेदनाओं का विस्तृत फलक है। उनकी प्रेमानुभूति उनके मानस से निकलकर संसार के प्रत्येक प्राणी के हृदय की अनुभूति बन गई है। वे मानवता की मर्यादा और उसकी अनन्त सीमाओं को जानते हैं और अन्ततः उसका निर्वाह करने के आकांक्षी हैं। यही कारण है कि प्रेम के उदात्त स्वरूप को अनुभूति और चिन्तन दोनों स्तरों पर प्रस्तुत करने में वे पूरी तरह सफल हुए हैं। प्रेम की महिमा का गुणगान करती निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए -

गन्ध-विहीन फूल हैं जैसे चन्द्र चन्द्रिका-हीन।
यों ही फीका है मनुष्य का जीवन प्रेम-विहीन ॥
प्रेम स्वर्ग है, स्वर्ग प्रेम है, प्रेम अशोक अशोक।
ईश्वर का प्रतिबिम्ब प्रेम है, प्रेम हृदय-आलोक ॥

नवजागरण काव्य में वर्ण्य विषय का अद्भुत विस्तार देखने को मिलता है। यह अकारण नहीं है कि संवेदनशील कवि रामनरेश त्रिपाठी ने प्रकृति को भी स्वतन्त्र रूप में काव्य का विषय बनाया है। जीवन और जगत् के प्रायः समस्त दृश्यों और पदार्थों को काव्य का विषय बनाने की सफल कोशिश

पूर्वोत्तर प्रभा

करते हुए वे अपनी रचनाओं में प्रकृति का बड़ा ही मनोहारी चित्रण करते हैं। प्रकृति का उपयोग वे मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए खास ढंग से करते हैं। वे प्रकृति के इर्द-गिर्द नहीं घूमते अपितु प्रकृति और उसके बिम्बों को मनुष्य की दुनिया के इर्द-गिर्द घुमाते हैं। मानव जीवन में व्याप्त विषमता, असमानता, निरर्थकता आदि को काव्य-संवेदना के स्तर पर वे प्रकृति के माध्यम से भी प्रकट करते हैं-

या अनन्त के वातायन से स्वर्गिक विपुल विमलता।
झलक रही थी धरा धाम को थी धो रही धवलता ॥
सुख की निद्रा में निमग्न था एक-एक तृण वन का।
था बस, सुखद सुशीतल सन-सन मन्द प्रवाह पवन का ॥

जीवन, समाज और संस्कृति से गहरे जुड़े रामनरेश त्रिपाठी का साहित्य की सभी विधाओं पर एकाधिकार है। उनकी दृष्टि तयुगीन परिवेश, भाषा, छन्द-योजना आदि पर समान रूप से पड़ती है। उनकी कविताओं की भाषा खड़ीबोली है। भौगोलिक दूरियों को तय करती हुई हर अंचल में हल्का छायांतरण लिए भी वह अपना मूल रूप सुरक्षित रखती है। उनके पास विपुल शब्दावली है। अपनी रचनाओं में भावनाओं का समावेश कर वे उन्हें सम्प्रेषणीय एवं प्रभावी बनाते हैं। त्रिपाठीजी की कविताएँ कोमलता का संचार करती हैं। सादृश्यमूलक अलंकारों में उन्हें रूपक और उपमा अलंकार विशेष प्रिय हैं। अपनी कल्पना शक्ति के बल पर उन्होंने नूतन उपमान विधान किया है। 'पथिक' में

उन्होंने अनेक कोमल उपमानों की योजना की है।
उदाहरणार्थ -

चंचल वीचि मरीचि-वसन से सजकर नीले तन को।
होड़-लगी-सी उछल रही थी चारु-चन्द्र-चुम्बन को ॥
बैठ जलधि तीरस्थ शिला पर पथिक प्रेम-व्रत-धारी।
देख रहा था छटा चन्द्र की चित्त विमोहनहारी ॥

कविवर त्रिपाठी की रचनाओं में छन्दों का प्रभावी विधान सहज अनुभूत है। उन्होंने छन्दों को संगीतमय साँचे में ढालकर प्रसंगानुकूल एवं भावानुकूल बनाने का प्रयास किया है। भिन्न-भिन्न भावों की अभिव्यक्ति वे अलग-अलग छन्दों में करते हैं। भाव के साथ-साथ उनकी कविताओं में छन्द परिवर्तित होता रहता है तथा पंक्तियाँ छोटी-बड़ी होती रहती हैं।

कविता में प्रतीकों का सहारा कवि को वहाँ लेना पड़ता है जहाँ सामान्य भाषा में प्रभावी अभिव्यक्ति करना संभव नहीं हो पाता। कभी-कभी कुछ शब्द अपना प्रतीकार्थ

जनवरी-जून 2021

व्यक्त करते हुए रूढ़ बन जाते हैं। रामनरेश त्रिपाठी अपनी काव्यानुभूति की सार्थक अभिव्यक्ति हेतु प्रतीकों का भी आश्रय लेते हैं। अपने 'मिलन' तथा 'स्वप्न' खण्डकाव्य में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग कर उन्होंने सूक्ष्म भावों एवं व्यापारों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनकी काव्य-कला का अपूर्व चमत्कार वहाँ सहज ही परिलक्षित होता है।

काव्य का शिल्प उसके वक्तव्य के अनुसार होता है। रामनरेश त्रिपाठी की कविताएँ मानवीय कल्याण व लोकहित को लक्ष्य कर रचित हैं इसी से प्रायः उनकी शैली सांकेतिक और चित्रात्मक न होकर उपदेशात्मक हो गई है।

समाजशास्त्र में इस रचनात्मक चिन्तन प्रक्रिया को चेतना की संज्ञा दी गई है। परम्पराओं और रूढ़ियों के कारण अक्सर एक तरह की जड़ता को नष्ट करते हुए जो विचार अथवा बुद्धि मनुष्य को नये मार्ग, नये उपाय और नयी उपलब्धियों की ओर ले जाएँ तथा जिसके प्रभाव से व्यक्ति व समाज एक नया जागरण अनुभव करने लगे, वही चेतना है। मनुष्य और सभ्यता की आधारभूमि व्यक्ति की स्वतन्त्र चेतना नहीं है अपितु समाज की चेतना का स्वतन्त्र होना ही मानवीय सभ्यता का आधार है। प्राणियों के अभाव और दुःखों की तीव्रता का अनुभव उस स्तर पर पहुँचकर ही अनुभूत किया जा सकता है। जब रचनाकार परदुःखकातर होकर वंचितों की पृष्ठभूमि को पूरी तरह से आत्मसात कर लेता है तभी उसकी रचना वास्तविक ही अमरत्व को प्राप्त कर पाती है इसीलिए जब वे आदर्श, जीवनमूल्य और नैतिकता को रेखांकित करते हुए लोकमंगल की कामना करते हैं तो उनका रचनात्मक चिन्तन मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को एक साथ समेटते चलता है।

रामनरेश त्रिपाठी महात्मा गाँधी की विचारधारा के समर्थक हैं। उनकी समस्त रचनाओं में गाँधीवाद के प्रति निष्ठा अभिव्यक्त हुई है। वे निराश, दुःखी, हारे, टूटे मनुष्य के अंतस् में दबी एक चिनगारी देखते हैं। उन्हें विश्वास है कि मनुष्य कभी-न-कभी उसी आशा, प्रेम और विश्वास से पुनः भर उठेगा। देश के लोग फिर से एकमन, एकप्राण हो सकेंगे तब देश में कहीं द्वेष और अलगाव नहीं होगा। इसके लिए वे मानवीय विश्वास जमाने तथा मनुष्य को कर्ममय होने की प्रबल आवश्यकता प्रतिपादित करते हैं –

*जग में सचर अचर जितने हैं सारे कर्म निरत हैं।
धुन है एक न एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन भर आतप सह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है ॥*

बढ़ती हुई अराजकता के मध्य समाज विकास पर जाने की बजाय एक विचित्र आपाधापी की दुरावस्था में पहुँच गया है। जाति, भाषा, धर्म, अर्थ आदि से प्रभावित परिस्थितियों में पिसते आमजन और शोषित वर्ग को देख कवि की पीड़ा उग्र हो उठती है। निर्मम तथा संवेदनाहीन यथास्थितिवादी

व्यवस्था को अनुभव कर वह क्रान्तिकारी हो उठता है तथापि यह तमचाई उग्रता नहीं है। वहाँ परिवर्तन की आकांक्षा शान्त एवं संयमित स्वर में यातना शिविर को ध्वस्त करना चाहती है। कवि सक्रियता उत्पन्न करने का अभिलाषी है –

*फिर कहता हूँ उरो न दुःख से कर्म मार्ग सम्मुख है।
प्रेम-पंथ है कठिन यहाँ दुःख ही प्रेमी का सुख है ॥
कर्म तुम्हारा धर्म अटल हो कर्म तुम्हारी भाषा।
हो सकर्म मृत्यु ही तुम्हारे जीवन की अभिलाषा ॥*

कवि रामनरेश त्रिपाठी की रचनाएँ उनकी संवेदनशीलता और जनमानस के प्रति उनके निरन्तर लगाव की प्रबल साक्षी हैं। कवि की करुणार्द्र आत्मा की बेचैनी उनकी रचनाओं में सफलतापूर्वक अभिव्यक्ति पा गई है। कहना न होगा कि कवि के निर्भय और निर्भीक कर्ममय चेतनापूर्ण मन ने सामाजिक भय और आतंक के बीच सच कहने की शक्ति और सामर्थ्य प्राप्त कर ली है। त्रिपाठीजी की रचनाएँ उनके निश्चल मन व मार्मिक संवेदना का परिचय देती हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने जीवनानुभवों को पाठकों के समक्ष रखता हुआ कवि मानवीय संवेदना व कर्ममय दृष्टि को अभिप्रेरित करता है।

सभ्यता के परिवर्तित होते रूपों के साथ कवि कर्म कठिन होता जा रहा है। इस युग में वही कविता श्रेष्ठ है जो संघर्षरत आम आदमी के यथार्थ और उसकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का सूक्ष्म निरीक्षण तथा विश्लेषण करे एवं उसे अपने में समाहित कर ले। रामनरेश त्रिपाठी की रचनाएँ इस कसौटी पर खरी उतरती हैं। शासन-तन्त्र की अराजकता, भ्रष्टाचार, दुराचार, अनैतिकता, अधार्मिकता, कर्तव्यविमुखता आदि के प्रति विरोध का स्वर और प्रतिरोध की संस्कृति त्रिपाठीजी की रचनाओं में मुखरित है।

सन्दर्भ :

1. त्रिपाठी, रामनरेश, *पथिक (खण्डकाव्य)*, हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग, बारहवाँ संस्करण.
2. शर्मा, हरिचरण, *आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास*, मलिक एंड कंपनी, जयपुर.
3. अधीर, इंदरराज बैद, रामनरेश त्रिपाठी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली.
4. तलवार, वीरभारत, *राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य*, किताबघर, नई दिल्ली.
5. डॉ॰ नगेन्द्र, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
6. वाजपेयी, नन्ददुलारे, *आधुनिक साहित्य*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.